

महावीर जयन्ति स्मारिका - २००७ (फोल्डर नं. ०१४०२५)

मुख्य टाइटल

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – भगवान महावीर-जीवन व दर्शन

चउवीस तित्थयर भक्ति -----	१
मङ्गलाष्टक-----	२
आज जन्म दिन सन्मति प्रभु का-----	३
जब बालक से विभु बने-----	४-५
तीर्थकर महावीर -----	६-८
महावीर का श्रावक-----	९-११
महावीर का वीतराग दर्शन -----	१२-१५
वर्तमान में भगवान महावीर के तत्त्व-चिंतन की सार्थकता-----	१६-१८
केवलज्ञानी भगवान महावीर-----	१९-२०
भगवान महावीर के सिद्धान्त-आज परिवेश में-----	२१-२२
भगवान महावीर प्रभु का तीसरा भव मरीचि के रूप में-----	२३-२४
भगवान महावीर और उनका जीवन दर्शन -----	२५-२६
भगवान महावीर के विचार-विश्वशान्ति के व्यवहार -----	२७-३०
भगवान महावीर का जीवन घटना प्रदान क्यों नहीं -----	३१-३४
भगवान महावीर की साधना-----	३५-३६
विश्व शान्ति के प्रेरक भगवान महावीर -----	३७
भगवान महावीर का सर्वोदय तीर्थ और श्रावकाचरण-----	३८-३९
महावीर नमन -----	४०

द्वितीय खण्ड – अध्यात्म और सिद्धान्त

मोक्ष पदार्थ-----	१-३
अध्यात्म व अहिंसा-----	४-६
अध्यात्म और सिद्धान्त -----	७-१४
द्रव्य के साधारण गुण-----	१५-१६
निश्चय-व्यवहार -----	१७-२२
अन्तरात्मा की अन्तर्मुखता और उसका उद्भव-----	२३-२५
लघुतत्त्वस्फोट के परिप्रेक्ष्य में आचार्य अमृतचन्द्रसूरि के कृतित्व का वैशिष्ट्य -----	२६-३४
आचार्य अमृतचन्द्र एवं उनका लघुतत्त्वस्फोट-----	३५-३९
देखनेवाले को देखने का उपाय -----	४०-४५
जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त -----	४६-५०
तत्त्वबोध-----	५०

कर्म सिद्धान्त एवं समाज न्याय व्यवस्था-----	५१-५५
निज आत्मा ही परम ध्येय-----	५६-५८
जैन दर्शन में लोक की संरचना-----	५९-६१
मोक्षमार्ग की द्विविधता-----	६२-६३
जैन दर्शन का पुनरावलोकन-----	६४-७०
जैन दर्शन में कर्मबंध प्रक्रिया-----	७१-७२
तृतीय खण्ड – भक्ति और साहित्य-साधना	
भक्ति में मुक्ति का अंकुर-----	१-५
साधु समाधि और सुधा साधन एवं आचार्य स्तुति-----	६-८
भक्ति का फल-----	९-१०
जिनेन्द्र दर्शन-----	११-१४
बीसवीं सदी के शलाका महापुरुष आ. श्री शान्तिसागरजी महाराज और दिगम्बरत्व-----	१५-१९
आचार्य श्री शान्तिसागरजी का चरम मांगलिक प्रवचन-----	२०-२३
क्षुल्लक श्री जिनेन्द्र वर्णी एक सिमटा-सा विराट व्यक्तित्व-----	२४-२६
अपने भीतर झाँको-----	२६
राजस्थानी जैन सन्तों की साहित्य साधना-----	२७-३५
मानवीय मूल्यों के सजग पहरी जैनपुराण-----	३६-३९
जैन एवं जैनेतर साहित्य में सीता निर्वासन-----	४०-४८
आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का सारस्वत योगदान-----	४९-५१
समाधिमरण-संथारा अहिंसा है न कि...-----	५२-५७
स्वधर्म रक्षा का प्रयत्न-सल्लेखना-----	५८-६५
समाधिमरण-तुलना एवं समीक्षा-----	६६-७२
चतुर्थ खण्ड – संस्कृति और इतिहास	
जिन छत्र-----	१-२
प्राचीन भारत के वैश्विक गणतंत्र-प्राणीतंत्र-----	३-६
जैन समाज-जागो-----	७-१०
जैन संस्कृति वेदपूर्व है-----	११-१३
बाहुबली प्रतिमा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-----	१४-१७
वीर-प्रार्थना-----	१७
वैशाली में अनुभूत करें महावीर दर्शन-----	१८-२२
महावीरमय-अहिंसामय हो जाना-----	२२
ऐतिहासिक अतिशय क्षेत्र गोधा-----	२३-२४
जैन संस्कृति संरक्षण एवं संवर्द्धन-----	२५-२७
जयपुर के जैन दीवान-----	२८-३४
जैनधर्म का प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण-----	३५-३६

अहिंसक शाकाहार-स्वास्थ्य का आधार-----	३७-३९
मौन चिन्तन-चित्त की एकाग्रता -----	४०-४१
मुनि परम्परा के निर्वाहक-आचार्य श्री भरतसागरजी -----	४२
सीख-संकलन -----	४३
बदलती जीवन शैली-अहिंसा एक मात्र विकल्प -----	४४-४५
दिगम्बरत्व का महत्त्व -----	४६-४८
महावीर गीत -----	४८
आचार्य कुन्दकुन्द और उनके उपदेश -----	४९-५०
न्यायाचार्य पं. माणिकचन्दजी कौन्देय -----	५१-५२
ज्ञान बिना तप कैसा-----	५२
श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा -----	५३-५४
मालवाधिकार एवं जैन दर्शन -----	५५-५६